ध्वनि- विज्ञानक उपादेयता आ' ध्वनिक श्रोत एवं विकास: एक अनुशीलन

डा. विजयेन्द्र झा[1], डा. सुमन कुमार[2], डा. राधा कुमारी[3], डा. सुरेन्द्र भारद्वाज[4], निशु कुमारी[5]

[1] पूर्व प्राचार्य, सम्प्रति अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एल. एन. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ, बी. आर. ए. बी. यू.), मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

[2] अध्यक्ष, मैथिली विभाग, एम. एल. टी. कालेज (अंगीभूत एकाइ, बी. एन. एम. यू. मधेपुरा), सहरसा, बिहार, भारत

[3] अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ, बिहार, भारत

[4] वरीय सहायक प्राचार्य, मैथिली, सी. एम. कालेज (अंगीभूत एकाइ, एल. एन. एम. यू.), दरभंगा, बिहार, भारत

[5] निशु कुमारी, एम. ए., यूजीसी-नेट (मैथिली), एल. एन. एम. यू., दरभंगा, बिहार, भारत

सारांश-मैथिली भाषाक ध्वनि सान्दर्भिक प्रस्तुत आलेख ध्वनि विज्ञानक उपादेयता, ध्वनिक श्रोत एवं विकासपर केन्द्रित अछि, जाहि मध्य विदेशी भाषाक शिक्षा, मातृभाषाक वैशिष्ट्य, विविध भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन, विभिन्न लेख-पद्धतिक अध्ययन आ' भाषाक तुलनात्मक अध्यन आदिक हेतु ध्वनि विज्ञानक उपयोगताकेँ प्रस्तुत कएल अछि। ध्वनिक उत्पत्ति प्रसंग ध्वनि-उद्गमसँ ल' ध्वनि-श्रवणक समस्त प्रक्रिया उल्लिखित अछि; संगहि ध्वनि सम्बन्धी अध्ययन हेतु सांवाहनिक आ' श्रावणिक विज्ञानक महत्वकेँ सेहो बुझाओल गेल अछि। मैथिली ध्वनिक स्रोत प्रसंग विस्तारसँ स्वर-ध्वनि, व्यंजन-ध्वनि, नासिक्य ध्वनि, अन्तस्थ आ' ऊष्म ध्वनिक सहयोगेँ निर्मित शब्द सभमे ध्वनि परिवर्तन प्रक्रियाकेँ अनेक उदारण दए प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मैथिली अत्यन्त प्राचीन भाषा अछि। चूकि अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सदृशहिँ मैथिली सेहो संस्कृत भाषासँ विकसित भेल अछि, तेँ अद्यावधि संस्कृत सदृशहिँ एहमे कारक विभक्ति आ' बहुवाची शब्द ग्रीक, लैटिन, संस्कृत, अवेस्ता आदि संयोगात्मक भाषे जेकाँ मूल शब्दक संग जुडल रहैत अछि। ओना मैथिलीमे सहायक क्रिया (परसर्ग) आदि संबंधतत्वक प्रयोग संयोगात्मक आ' वियोगात्मक दुनू रूपेँ अभडैत अछि। जेना- "जाइत अछि" आ' "जाइछ"। तथापि मैथिली भाषावैज्ञानिकलोकनि मैथिलीकेँ हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषा सदृश वियोगात्मके भाषा मानैत छथि। निष्कर्षत:अस्थालीपुलक न्यायेन् ध्वनिक उपयोगिता, स्रोत, आ' विकासपर केन्दित प्रस्तुत आलेख अनुसंधित्सुलोकनिक हेतु अवश्य सहायक सिद्ध भ' सकैत अछि।

बीज-शब्द: अन्त:स्थ, ऐतिहासिक, ऊष्ण, प्रयोगात्मक, मातृभाषा, ध्वनि, ध्वनि-विज्ञान, ध्वनिलिपि, ध्वनिक विकास प्रक्रिया, नासिक्य, श्रावणिक, वयंजन, स्वर, स्वनिम, संशोधन, सांवाहनिक,

प्रस्तावना

भाषा परिवर्तनशील अछि। भाषामे परिवर्तन सतत नियमानुसार नहि होइत अछि। भाषा परिवर्तनक नियममे भौतिक विज्ञानक नियमक भाँति अपरिवर्तनशीलता नहि पाओल जाइत अछि, कारण भाषाविज्ञान एकटा गत्यात्मक विज्ञान थिक। मुदा, भाषामे किछु परिवर्तन तँ नियमानुसार होइत अछि। नियमसँ एहिठाम तात्पर्य अछि, भाषाक घटित होयबाक परिस्थितिमे एकसरहाँ एकरूपता रहैत अछि। ओहि एकरूपताकेँ नियमक रूपमे जानल जाइत अछि। मुदा, एकर अपवाद सेहो भेटैत अछि, जेना- कर्म›कम्म›काम बनल, मुदा धर्म›धम्म›धरम बनल, धाम नहि बनल। एतहि ध्वनि नियमक विषयमे भ्रम उत्पन्न होइछ। 1 भाषाविज्ञानमे ध्वनि (स्वन), ध्वनि-यंत्र, ओकर विकार, विकास आ 'परिवर्तन आदिक अध्ययन कएल जाइत अछि। जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे एकर प्रभाव देखबामे अबैत अछि। भाषा विषयक परिवर्तनकेँ " विकार" वा "विकास" कहल जाइत अछि। भाषाक विभिन्न अंगक सदृशहिँ ध्वनिमे सेहो परिवर्तन होइत अछि। ई परिवर्तन आभ्यन्तर आ' वाह्य कारणेँ होइत अछि। आभ्यन्तर कारणमे वक्ता आ'श्रोता प्रधान होइत अछि, मुदा वाह्य कारणमे मनुक्खक सुख, अनुकरणक अपूर्णता, भ्रामक व्युत्पत्ति, भावुकता, वाग्यंत्रक विभिन्नता, सादृश्य, विदेशी ध्वनिक प्रभाव आदि कारण भ' सकैछ। एही विभिन्न कारण आ' ओकर दशाक अध्ययनक लेल ध्वनि-नियमकेँ स्थापित कएल गेल अछि।

स्वनिम ज्ञानसँ भाषाक शुद्ध उच्चारणमे सुगमता होइत अछि। स्वनिमक माध्यमहि कोनो भाषाक मूल ज्ञान प्राप्त होइत अछि। भाषाक आन एकाइसभ- शब्द, पद, वाक्य आदिक ज्ञान ता' धरि संभव नहि होइछ जा' धरि स्वनिमक ज्ञान प्राप्त नहि होइत अछि, कारण भाषाक परवर्ती वृहत्तर एकाइ स्वनिमपर आधारित रहैत अछि। ध्वनि-विज्ञानक उपयोगिताक प्रसंग पाश्चात्य विद्वान् "वैन राइपर"(Van Riper) क विचार छनि- "Without phonetics any person in the field of general speech is considered illiterate." 2

ध्वनि-विज्ञानक उपादेयताक प्रसंग निम्न बिन्दुपर विचार कएल जाए सकैछ।

विदेशी भाषाक शिक्षा

ध्वनि-विज्ञानक मुख्य उद्येश्य विदेशी भाषा सिखबाक लेल ओकर ध्वनिकेँ नीक जेकाँ बुझब थिक। ध्वनि-विज्ञान द्वारा भाषाकेँ सहज, सरल, शीघ्र आ' विशुद्ध रूपेँ सिखल आ' सिखाओल जा सकैत अछि। कोनो भाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण हेतु ओकर ध्वन्यात्मक विश्लेषण करब अत्यन्त आवश्यक होइछ, जाहि हेतु प्रशिक्षण लेब अनिवार्य होइत अछि। एहि प्रशिक्षणमे ध्वनिकेँ बेरि-बेरि सुनिकए जाहि प्रकारेँ श्रवणा-शक्तिकेँ तीव्र बनाबए पडैछ, ताहि रूपमे भाषणक अवयवक प्रत्येक मांसपेशीकेँ नबीन ध्वनिक उच्चारणार्थ अभ्यास करए पडैत अछि। एहि ध्वन्यात्मक प्रशिक्षण हेतु ध्वनिलिपिक सेहो सहायता लेबए पडैतअछि।3

भातृभाषाक वैशिष्ट्य

मातृभाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण हेतु ध्वनि-विज्ञानक सहायता सेहो लेबए पडैत अछि। प्रत्येक भाषाक कोनो ने कोनो रूप होइत अछि। आदर्श भाषाक बोली बजनिहार चाहथि तँ ध्वनि-विज्ञानक उपयोग क' कए ओहि भाषाकेँ आदर्श रूपेँ बाजि सकैत छथि।

विविध भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन

भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन हेतु सेहो ध्वनि-विज्ञान उपयोगी होइत अछि। भाषाक पूर्वक रूप आ' वर्तमानक स्वरूपक तुलनात्मक अध्ययन हेतु ध्वनि-विज्ञानक बोध हएब आवश्यक अछि। कोनो भाषाक ऐतिहासाकता ओकर व्याकरणक अध्ययनसँ स्पष्ट भ' जाइछ। तेँ मैथिलीओ भाषाक संग इएह नियम लागू होइछ। मैथिली भाषाक विभिन्न कालमे भेल परिवर्तन तथा एकर अन्य भाषासँ ऐतिहासिक संबंध स्थापित करबामे सेहो मैथिली ध्वनि-विज्ञानक उपयोग महत्वपूर्ण होइत अछि।4

प्रयोगात्मक विश्लेषण

ई ध्वनि-विज्ञानक एकटा महत्वपूर्ण आ' अनिवार्य अंग थिक। ध्वनि-विज्ञानी अपन कानसँ जे सुनैत छथि आ' जे ठीकसँ नहि सुनि पबैत छथि, ताहि हेतु प्रयोगशालाक आवश्यकता पडैत अछि। आजुक समयमे स्रोत-ध्वनि विज्ञान, ध्वनि-विज्ञानक एकटा स्वतंत्र विभाग बनि गेल अछि।

ध्वनि विज्ञाक एकटा महत्वपूर्ण उपयोग इहो अछि जे ओ आन भाषासभक प्रति उदार दृष्टिकोण रखैत अछि। जेना, एक भाषा-क्षेत्रक लोक दोसर भाषा-क्षेत्रक भाषाकेँ परस्पर सम्मान नहि दैत अछि। उदाहरणार्थ, कौशल (Kaushal) शब्दक 'a' केँ किछु लोक 'o' क रूपमे आ' किछु 'au' क रूपमे बजैत अछि। ध्वनि भाषाविज्ञानीलोकनि एकर अर्थ विभिन्न स्थानमे भिन्न-भिन्न रूपक विकास मानैत छथि। ओ लोकनि अपन उदारवादी दृष्टिएँ भाषामे नीक-बेजाए वा शुद्ध-अशुद्ध किछु नहि मानैत छथि।5

बोली विशेषक अध्ययन

ध्वनि-विज्ञानक उपयोग बोली-विज्ञानमे सेहो होइत अछि। आधुनिक भाषावैज्ञानिकलोकनि 'फोनिम प्रिन्सप्ल' (ध्वनि ग्रामीण नियम)क उपयोग बोली-विज्ञानमे सेहो कए रहल छथि। तेँ बोली-विज्ञानक कोनो भेदक अध्ययनमे ध्वनि-विज्ञानक कोनो भेदक सहयोग लेब आवश्यक भ' जाइत अछि। पाशचात्त्य विद्वान् डा. जार्ज अब्राहम ग्रिअर्सन
(7 जनवरी, 1851- 9 मार्च, 1941 ई.) जे भारतमे 'बृहत् भाषा सर्वेक्षण' कएलनि, ओकर महत्व अन्य दृष्टिएँ जे होअए; मुदा, हुनक सर्वेक्षण जाहि लोकक माध्यमे भेल छल, से प्रायः ध्वनि-विज्ञानसँ पूर्णतः अनभिज्ञ छलाह आ' तेँ बोली विज्ञानक दृष्टिएँ एकर महत्व अति न्यून अछि।6

दोषयुक्त भाषाक संशोधन

कोनो व्यक्तिक भाषण-अवयवक गठनक कोनो दोषक कारणेँ ओकर भाषा विकृत भए सकैछ। संगहि त्रुटिपूर्ण अभ्यासक कारणेँ भाषा दोषपूर्ण भए जाइत अछि। मूल रूपेँ व्यक्ति विशेषक भाषामे दोष आलस्य किंवा त्रुटिपूर्ण अभ्यासक कारणेँ होइत अछि। सामान्यतः वक्ता स्वर-व्यंजनक सही रूपपर ध्यान नहि दैत छथि। तेँ भाषण अवयवक गठन-दोष होएबाक कारणेँ भाषण त्रुटिपूर्ण भ' जाइत अछि आ' तेँ एकरा ध्वनि-विज्ञानक स्वतंत्र विभागक आश्रय लए सुधारल जा सकैछ, जे 'स्पीच थेरापी' वा 'आर्थोफोनी' कहबैत अछि। एकर उपयोगसँ उच्चारण पद्धतिकेँ उचित रूपेँ प्रस्तुत कएल जा सकैछ। एहि प्रकारक उदाहरण इंगलैण्ड आ' अमेरिकाक भाषाक ध्वनिमे देखल जा सकैछ।7

विभिन्न लेख-पद्धतिक अध्ययन

वर्तमानमे ध्वनि-विज्ञान ने मात्र भाषाक उच्चारण संबंधी त्रुटिक निवारण हेतु प्रयुक्त होइछ; अपितु, लिपिक निर्माण आ' ओकर सुधारमे सेहो अहम् सहयोग प्रदान करैत अछि। अनेक वैज्ञानिकलोकनि कतोक अफ्रिकी, अमेरिकन, इण्डियन आदि भाषाक ध्वन्यात्मक विश्लेषण क' कए ओकरा हेतु उत्तम लिपिमालाक सृजन कएलनि अछि। अग्रेजी सदृश विकसित भाषाक लिपि ओ उच्चारणमे जे विषमता अछि, ओकर सुधारमे सेहो ध्वनि-विज्ञान उपयोगी होइछ। ध्वनि विज्ञान साधारण ओ असाधारण दुनू लिपिक सृष्टिमे अद्‌भुत सहायक होइत अछि। एहि प्रकारेँ देखैत छी जे शार्टहैंड, टेलीग्राम-कोड, ब्रायल लिपि(आन्हरक लिपि) तथा हाल-सालमे इन्टरनेटक सहयोगे भ्वाइस मेसेज, गुगल भ्वाइस ट्रान्सलेशन आदिक निर्माणमे ध्वनि-विज्ञान सहायक होइत अछि।8

भाषाक तुलनात्मक अध्ययन

भाषाक तुलनात्मक अध्ययनमे ध्वनि-विज्ञानक भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होइत अछि। एकटा भाषा कोनो अपन सम्बन्धित भाषाक संग वा एक भाषाक ओकर बोलीक संग तुलना करबामे ध्वनिलिपि सहायक सिद्ध होइत अछि। कारण कोनो एक भाषामे प्रयुक्त लिपि द्वारा अन्य प्रामाणिक भाषा आ'ओकर बोलीक विशेषताकेँ प्रदर्शित करब अत्यन्त दुरूह काज अछि। तेँ भाषाक ध्वनिक मध्य सूक्ष्म भेदकेँ प्रदर्शित करबाक हेतु ध्वनिलिपिक व्यवहार आवश्यक भ' जाइत अछि।9

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे ध्वनि-विज्ञानक उपयोगिता भाषाक ऐतिहासिकता, शुद्धता, संप्रेषणीयता, अध्ययनक सौविध्य, परिनिष्ठित लेखन-कला, भाषा-बोलीक तुलनात्मक अध्ययन, विदेशी भाषाक शिक्षण-प्रशिक्षण, भाषा-विकासक प्रक्रिया आदि क्षेत्रमे प्रमुखतासँ होइत अछि।

ध्वनिक उत्पत्ति

विभिन्न वस्तुक बीच घर्षण क' कए, खुरचि कए,रगडि कए, वायुकेँ फूकि कए वा हिलाए-डोला कए ध्वनि उत्पन्न कएल जा सकैत अछि। एहि क्रियामे वस्तुकेँ कम्पमान् क' ध्वनि उत्पन्न कएल जाइछ। एतए धरि जे मनुक्ख सेहो अपन वाक्-तन्तुकेँ कम्पित क' ध्वनि उत्पन्न करैत अछि; कारण ध्वनि ऊर्जाक एकटा एहन रूप थिक जे हमरालोकनिक कानमे श्रवण-संवेदना उत्पन्न करैत अछि। ऊर्जा संरक्षण-नियमक अनुसार ऊर्जाकेँ नहि तँ उत्पन्न कएल जा सकैछ आ' नहि विनष्ट कएल जा सकैछ। एकरा मात्र एक रूपसँ दोसर रूपमे रूपान्तरित कएल जा सकैछ। इएह नियम सेहो ध्वनिक लेल होइत अछि। जेना, जखन हाथसँ ऊर्जा लगा कए थोपडी बजाओल जाइछ, तँ ऊर्जा ध्वनिक रूपमे रूपान्तरित होइत अछि आ' ओहिसँ ध्वनि उत्पन्न होइत अछि। हरमुनियाँ वा बासुरी आदि वाद्ययंत्र सेहो वायुक सहायतासँ बजबैत छी। ई वायु दू प्रकारक होइत अछि। एक तँ ओ जे नाक वा मुहक मार्गसँ भीतर खिचैत छी- ई वातावरणक स्वच्छ वायु होइत अछि। एहि शुद्ध वायुसँ हमरालोकनि अधिक ध्वनि उच्चरित नहि क' पबैत छी। विश्वक थोडे'क भाषा जेना, अफ्रिका, अमेरिका आदिक किछु क्लिक ध्वनिक उच्चारणमे ई किछु काज क' पबैछ। दोसर प्रकारक ओ वायु होइछ जे फेफडाक दूषित हवाकेँ साफ क' बाहर निकलैत अछि। यथार्थमे इएह दोसर वायु संसारक समस्त भाषाकेँ बजबामे सहायता करैत अछि।

फेफराकेँ साफ कएलाक पश्चात् वायु श्वास रूपमे श्वास-नलिकाक मार्गसँ बाहर निकलैत अछि। स्वर-यंत्रक पूर्व एहिमे कोनो प्रकारक विकार नहि होइत अछि। स्वर-तंत्रीक सहायतासँ एहि वायुकेँ मनमाना रूप देल जाइत अछि। एहिसँ आगाँ चलि आवश्यकतानुसार नासिका-विवर, मुख-विवर, अथवा दुनूसँ थोड-थोड वायु निकालल जा सकैछ। एहि क्रियाक संपादनमे 'कौआ' सेहो सहायक होइछ। ओहिठामसँ मुख-विवरमे प्रवेश करएबला हवा आवश्यकतानुसार जिह्वा, कण्ठ, तालु, दाँत, आ' ठोरक सहयोगसँ इच्छित रूप द' बाहर निकलैत अछि, जे बाहर अएलापर ध्वनि कहबैत अछि। संगहि आवश्यकता पडलापर एहि वायुक किछु अंशकेँ अनुनासिक ध्वनि उच्चरित करबाक लेल नासिका-विवरसँ सेहो निकालल जाइत अछि। एतए ध्वनि उत्पत्तिक प्रसंग "सांवाहनिक" आ' "श्रावणिक" ध्वनि-विज्ञानक चर्च करब अपेक्षित अछि।

सांवाहनिक वा प्रासरणिक ध्वनि-विज्ञान

एकरा भौतिकशास्त्रमे मात्र ध्वनि-विज्ञान कहल जाइत आछि। सांवाहनिक नाम एहि लेल उपयुक्त अछि, कारण भाषाशास्त्रमे एकरा अन्तर्गत एहि बातक अध्ययन कएल जाइछ जे कोन रूपेँ ध्वनि लहरि वक्ताक मुहसँ श्रोताक कान धरि आनल जाइत अछि। फेफरासँ निकलल वायु, ध्वनि-यंत्रक सक्रियताक कारणेँ आन्दोलित भ' बाहर निकलैत अछि। आ' बाहरक वायुमे प्रवेश क' एकटा विशेष प्रकारक कम्पनसँ तरंग उत्पन्न करैत अछि। ई क्रिया ओहिना होइछ जेना विशाल समुद्रक जल राशिक उपर लहरि उत्पन्न होइत अछि आ' ओकर पछिला लहरि आगाँक नब लहरिकेँ धक्का द' उत्पन्न करैत जाइत अछि। वायुक एहि प्रकारक तरंग श्रोताक कान धरि पहुँचैत अछि, आ' ओतए श्रवणेन्द्रियमे कम्पन उत्पन्न करैत अछि। सामान्यतः एहि ध्वनि-लहरिक वेग 1100-1200 फीट प्रति सेकेंड होइत अछि। जेना-जेना ई तरंग आगाँ बढैत जाइत अछि, एकर तीव्रता घटैत जाइत अछि। इएह कारण अछि जे दूरक लोककेँ ध्वनि कम सुनबामे अबैत अछि। अनेक ध्वनि-यंत्रक सहायतासँ भौतिकशास्त्रमे एहि तरंगक अति गम्भीर अध्ययन कएल गेल अछि, मुदा भाषाशास्त्रमे एकर ओते'क उपयोगिता नहि बुझाइत अछि।

श्रावणिक ध्वनि-विज्ञान

श्रावणिक ध्वनि-विज्ञानमे सुनबाक क्रियाक अध्ययन कएल जाइत अछि। तेँ एकरा बुझबाक लेल सबसँ पहिने कानक बनाबटिकेँ देखब आवश्यक अछि। मनुक्खक कानकेँ तीन भागमे बाँटल गेल अछि, जे क्रमशः "वाह्य कर्ण", "मध्यवर्ती कर्ण " आ' "अभ्यन्तर कर्ण " कहबैत अछि। वाह्य कर्णकेँ सेहो दू भाग कएल जा सकैछ। एक तँ ओ भाग जे उपरसँ टेढ-मेढ देखाइत अछि। सुनबाक क्रियामे एकर कोनो विशेष महत्व नहि रहैत अछि। दोसर, छिद्र वा कर्ण - नलिका थिक जे भीतर धरि जाइत अछि। एहि कर्ण-नलिकाक लम्बाइ करीब एक इंच होइत अछि। नलिकाक भीतरी छिद्रपर एकटा झिल्ली होइत अछि जे वाह्य कर्णकेँ मध्यवर्ती कर्णसँ सम्बद्ध करैत अछि।

मध्यवर्ती कर्ण एकटा छोट सन कोठलीनुमा होइत अछि, जाहिमे तीनटा छोट-छोट पातर हड्डी होइत अछि। एहि हड्डीएक एकटा सिरा वाह्य कर्णक झिल्लीसँ जुडल रहैत अछि आ' एकर दोसर भाग अभ्यन्तर कर्णक बाहरक छेदसँ जुडल रहैत अछि। एकरहिँ बाद अभ्यन्तर कर्ण सुरू होइत अछि। एहि भागमे शंखक आकारक

एकटा अस्थि-समूह होइत अछि, जाहिमे ओकरहिँ आकारक छिल्ली लागल रहैत अछि। एहि दुनूक बीच एक प्रकारक द्रव पदार्थ भरल रहैत अछि। एकर भीतरी सिरा झिल्लीसँ श्रावणी सिराक तन्तु जुडल रहैत अछि, जे मस्तिष्कसँ जुडल रहैत अछि। ध्वनि-तरंग जखन कान धरि पहुँचैत अछि तँ वाह्य कर्णक भीतरी झिल्ली वा कानक परदापर कम्पन उत्पन्न करैत अछि। एहि कम्पणक प्रभाव मध्यवर्ती कर्ण-अस्थि द्वारा भीतरक कर्णक द्रव पदार्थपर पडैत अछि आ' ओहिमे तरंग उठैत अछि, आ' ओही ध्वनिकेँ हमरालोकनि सुनैत छी। एहि प्रकारेँ ध्वनिक उत्पत्ति होइत अछि।

मैथिली ध्वनिक स्रोत:

मैथिलीक प्राय: समस्त ध्वनि (स्वन) मुख्य रूपेँ प्राचीन भारतीय आर्यभाषा अर्थात् संस्कृतसँ आयल अछि। संस्कृतक किछु स्वन मैथिलीक तद्भवहुमे टिकल अछि आ' किछु बदलि गेल अछि। एहि शब्द सभक स्थिर रहबाक आ' परिवर्तित भ' जएबाक थोड उदाहरण नीचाँ वर्णमालाक फराक-फराक ध्वनिक लेल देल जा रहल अछि। अध्ययनक सौविध्येँ एहि ध्वनिसभकेँ पाँच भाग- स्वर, व्यंजन, नासिक्य, अन्तस्थ आ' ऊष्मामे विभक्त कएल गेल अछि :

स्वर-ध्वनिक स्रोत -

अ- असँ - अकर्ण › अकान, आ-आसँ - आकाश › अकास, ऋ-ऋसँ- वृषभ › बसहा, अनृत › अनट, आ-आसँ- आशा ›आस, असँ - अर्ध › आध, अर्क ›आक। इ- इन्द्र› इनर, ईसँ-ईर्ष्या› इरखा, ऋसँ- घृणा› घिनाएब, ऋण› रिन। उ-उसँ› उत्कट› उकठ, ऊसँ› ऊषर› उसर, ऊनपंचाशत्›उनचास, ऊ-ऊसँ- ऊर्णा› ऊन, उसँ- ऊल्का› ऊक, ऋसँ- वृद्ध› बूढ। ए-एसँ- एकादश› एगारह, ऐसँ- ज्यैष्ठ›जेठ, य'सँ- व्यथा› बेथा, व्यवहार›बेबहार, कसँ- कंचुक› केँचुआ, कपाट› केबार, ऐ-ऐसँ-चैत्र› चैत, अइ- अविधवा› ऐहब, अपमृष्ट› एँठ।

ओ- ओसँ- ओष्ठ› ओठ, औसँ- पौत्र› पोता, अवसँ- अवद्›ओदरब, अवश्याय›ओस, उसँ- पुष्करिन › पोखरि। औ-औसँ-औषध›औखद, अउ/अवसँ- अंगुष्ठ› आँठा, अवमृश› आँसब, पत्रपुट› पतौडा। एहि प्रकारेँ विभिन्न संस्कृतक स्वर-ध्वनिसँ मैथिली ध्वनिक अनुरूप अनेक शब्दसबहिक उत्पत्ति भेल अछि, इएह संस्कृतक शब्दसभ उपर्युक्त मैथिली शब्दसभक श्रोत अछि।10

व्यंजन-ध्वनिक स्रोत:

क-कसँ-कंगण›कगना, तर्क› ताक। ख-खसँ- खनित्रि›खनती, क्षसँ-अक्षि› आँखि, लक्ष›लाख, षसँ- वर्ष›वरख, दोष›दोख। ग-गसँ-गर्भ› गाभ, कसँ- सकल›सगर, शाक›साग, ज्ञसँ-ज्ञान› गेआन। घ--घसँ - घृत› घिउ, व्याघ्र›बाघ, गसँ - गृह›घर, ग्रास›घास। ड. सँ- रंड्ग› रंड., अंगुल›आँगुर, कंड्गण›कंगना,। चसँ- चक्र›चाक, त्यसँ- सत्य›साँच, नृत्य›नाच। छसँ- छत्र›छाता, त्ससँ- मत्स्य›माछ, उत्साह›उछाह, क्षसँ- मक्षिका› माछी, क्षिप्›छिप, ससँ- सूतक› छुतका, षट्त्रिंशत्› छत्तीस, शसँ-शल्क›छाल, शिम्बा›छीमडि, शाव›छबरा, जसँ- जिह्वा ›जीह, द्यसँ-द्यूत ›जुआ, विद्युत्› बिजुरी, यसँ- सय्या›सेज, यज्ञ›जग, कार्य›काज। झ- युद्ध्य› जुझब, बुध्यसँ ›बुझब, श्य- श्यामल›झामर। ट- खट्वा›खाट, त्र- त्रुट्›टुटब, मणित्रिक› मनटीका, त- कृत›काटब, वर्त्म›बाट। ठ-ष्ठ/ष्ट- यष्टि›जाठि, काष्ठ›काठ, थ-स्थसँ - स्थाम›ठाम, प्रस्थाप› पठाएब। ड- डाकिनी› डाइनि, माण्ड›माड, द- दोलक› डोल, दर्भ›डाभ, टसँ- पाटलि›पाँडरि, वट›बड, ल- फल›फड, ताल›ताड। ढ-

पठ›पढब, पीठिका›पीढी, द्धसँ- वृद्धि›बाढि, वृद्ध›बूढ। ण- गण›गनब, ल- लवण›नोन। त- तप्त›तपत, थ-स्त/स्थ- स्तन› थन, स्थानक›थाना। द- दक्षिण› दहिन, कर्दभ› कादो। ध- धूम›धुआँ, दुग्ध› दूध, ध्वनि›धुनि। न- नप्तृ- नाति, नख›नह, ज्ञ- ज्ञाति›नाति, राज्ञी›रानी, ज्ञातिगृह› नइहर, ल- लिम्प› नीपब। प- पत्र›पात, सर्प› साप (साँप), फ- फाल›फार, पर्शु› फरसा, स्पन्द› फानब। ब- बन्ध›बान्हब, निम्बू› नेबो, व- वार्ता› बात, सर्व› सब। भ-भक्त ›भात। 11

नासिक्य ध्वनिक स्रोत:

ड.-रड्ग›रड., अड्गुल› आङु. र, कड्गण› कगना, द्र- मुग्द› मूड., मग्दुर› माङु.र। ड्ग- जड्.घा› जाड्.ह, लड्.घ›नाड्.ह, शृड्ग› सूड्.ह। न-नप्तृ›नाति, नख›नह, ज्ञ-ज्ञाति› नाति, राज्ञी, ज्ञातिगृह› नइहर, ल- लवण› नोन, लिम्प› नीपब, ण-गण›गणब। न्ह/न्ध - स्कन्ध› कान्ह, सन्धि› सान्हि, स्न- प्रस्नाप› पन्हाएब, कृष्ण› कान्ह। म-आम्र›आम। म्ह/म्भ- कुम्भकार›कुम्हार, स्तम्भ›थम्भ, ष्म- कुष्माण्ड›कुम्हड, क्ष्म- पक्ष्म›पम्ह आदि।12

मैथिलीक अन्तस्थ-ध्वनि-स्रोत:

र- रात्रि›राति, ल-तल›तर, फाल›फार, ढ- पठ›पढब, द्ध- वृद्ध›बाढि, वृद्ध› बूढ। ल- लाक्षा› लाह, बिल्व›बेल। ल्ह- प्रह्लाद›पोल्हाएब आदि।13

उष्म ध्वनि-स्रोत :

स-सर्व› सब, श-विंश› बीस, शत›सए, ष- महिष›महिस, ह-हस्त›हाथ, भ- लभ› लाभ, भाण्ड› हाँडी, ख- रेखा›रेह, घ- हस्तघट› हथहर, ध- मधुपर्क› महुअक, थ- यूथिका› जूही। एकर अतिरिक्त आपवादिक रूपेँ सेहो अनेक ध्वनिक विकास भेल अछि। जेना-उपरि›उपर, कपाट›केबार, उच्च›ऊँच, कंचुख› केँचुआ, सर्प› साँप, मधुसूदन›मकसूदन, अर्चो›आँच, शुकदेव› सूखदेब, कन्दु›गेन, पताखा›पतक्खा, भरत›भरथ(था), आकार›हकार, शाप›सराप, छाया› छाह, उल्लास›हुलास, गदाधर›गजाधर, जगन्नाथ› जगराथ, विक्रमादित्य› विक्रमाजित, जलकेलि› झलहेरि, ग्रन्थि›गेँठ, डमरू› डामरू, उदुम्बर›डुमरि, शुकतुण्ड›सुअउँडअ› सूँरा, घटय›गढब, भवन्ति (होअन्ति)›होथि, बहिर›बाहर/ बाहार, निम्बु›नेबो, सर्व›सभ, दूर्वा›दूभि, मार्गण› मांगब, मुंग्द/मुद› मूड., भग्दर›मांगुर, मुद्रीका/मुन्द्रिका› मुनरी, विपादिका›बेमाए, शाल्मली› समीर, रामेश्वर› रमेसर, महेश्वर›महेसर, बसुमती› बसुमति, लक्ष्मी›लछमी, इमरती›इमरतियि, हनुमान्› हलुमान विश्वेश्वर›विसेसर, कागज› कागत, दरभंगा›दरिभंगा, जवाहरलाल›जमाहरलाल/जमाहिरलाल इत्यादि। 14

मैथिली ध्वनिक विकास प्रक्रिया:

विश्वक समस्त भाषा विभिन्न कालखण्डमे बदलैत रहैत अछि। मैथिली ध्वनिक स्रोत प्राचीन आर्यभाषा (संस्कृत) रहल अछि। आधुनिक मैथिली " प्राभासँ मभा" 15 होइत वर्तमानक स्थितिमे पहुँचल अछि। एहिठाम ई देखल जाए जे संस्कृतक कोन ध्वनि कोन रूपेँ परिवर्तित भ' मैथिली ध्वनिक अनुरूप बनल अछि:

'ऋ'केँ छोडि प्राय: संस्कृतक समस्त स्वर मैथिलीमे टिकल अछि; मुदा मैथिलीक ध्वनि नियमक मोताबिक कतहु गुरुसँ लघु आ' लघुसँ गुरु भ' गेल अछि। जेना- अर्क› आक, हस्त›हाथ, आकाश› अकास, पाताल›पताल, दीपक›दीआ, भिक्षा›भीख, प्ईश्वर›इसर, षष्ठी›छठि, मुष्टि› मूठि, प्रभूत›बहुत, मूर्ख› मुरुख, सूर्य› सुरुज आदि परिणत भ' जाइछ। 'ऋ' स्वन

मैथिलीमे चारि रूपेँ परिणत भेल अछि - (क) अ/आ रूपमे- दृढ>दढ, वृषभ> बसहा, गृह>घर, विकृत> विकट, अनृत>उनट, मृति> मट्टि>माटि, नृत्य>नच्च>नाच। (ख)इ/ई रूपमे - जेना, कृष्ण>किसुन, घृणा>घिना, वृश्च- बीच, दृढ>दिढ, घृत>घी, धृष्ट>ढीठ आदि। (ग) उ/ऊ रूपमे- जेना, मृत>मुइल, मृज्ज>मूज, शृणोति> सुनए, पृच्छ>पूछ आदि। (घ) इरि रूपमे-जेना, वृक्ष> बिरिछ, तृप्त> तिरपित, गृहस्थ>गिरिहथ, पृथ्वी>पिरथी आदि। एहिना संस्कृतक 'ए' तथा 'औ' क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' मे परिवर्तित भ' जाइत अछि। जेना-तैल>तेल, गौर> गोर आदि। संस्कृतक 'ण्', 'व्', तथा 'श्' वर्ण मैथिलीमे क्रमशः'न्', 'ब्' तथा 'स्' मे बदलि जाइत अछि; जेना-प्राण>परान, शण>सन> सोन, प्रणाम>परणाम, वन> बन/बोन, नव>नब, आशा>आस, श्यामल> सागर इत्यादि। तत्समक 'ष्' मैथिलीमे कतहु 'ख' तँ कतहु 'स'मे परिवर्तित भ'जाइत अछि। षष्ठी>खष्ठी। एकर लेख संस्कृते'क अनुरूप रहैत अछि, मुदा उच्चारण कवर्गी 'ख'क अनुरूप रहैत अछि। षड्रस>खटरस, हर्ष>हरख, वर्षा>बरखा, रुष>रुसब, दोष>दोस, माषक>मासा इत्यादि। संस्कृतक समस्त संयुक्त व्यंजन नमैथिलीमे सरलीकृत भ' गेल अछि- (1) संस्कृतक कोमल व्यंजन लुप्त भ'जाइछ आ' ओकरासँ पूर्ववर्ती स्वर गुरु भ' जाइत अछि; जेना- मक्त>भात, दुग्ध>दूध, अर्क>आक, मृद्ग> मूड., चक्र>चाक, सप्त>सात, लग्न> लाँगट, नप्तृ>नाति,। एहिना कतहु-कतहु मात्र लोप भेटैत अछि, गुरुता नहि, जेना- पक्ष>पख, सर्व>सब, मधुपर्क> महुअक, अन्यत्र> अनत इत्यादि। जाहिठाम आघात अन्तिम स्वर पर पडैत अछि ओतए, पूर्व स्वरक गुरुत्व नहि रहैत अछि आ' दुनू व्यंजनक समीकरण भ'जाइत अछि। जेना- पत्र>पता, (पात), पृष्ठ>पुट्ठा, भक्तक>भत्ता, छत्रक>छत्ता/छाता आदि। नासिक्य संग स्पर्श रहलापर नासिक्य अपनासँ पूर्ववर्ती स्वरकेँ गुरु बनाए लैत अछि आ' स्वयं लुप्त भ' जाइत अछि।। जेना- अङ्क>आँक, अङ्ग>आँग, पंजर> पाँजर, कण्ट>काँट, अण्ड>आँड, अन्य>आन, झम्प>झाँप, हंस>हाँस, वंश>बाँस, कास्य> काँस इत्यादि। संस्कृतक अघोष स्पर्श ध्वनि (क्, प्, ट् इत्यादि) जखन दू स्वरक मध्य रहैत अछि तँ कखनहुँ काल घोष (ग्, ब, ड् इत्यादि) मे बदलि जाइत अछि। जेना- शाक>साग, सकल>सगर, शोक> सोग, आपाक>आबा, वट>बड, तपति>तबए, पठति>पढ ए आदि। तत्समक अल्पप्राण स्पर्श दूटा स्वरक मध्यमे, मैथिलीमे आबि लुप्त भ' जाइत अछि। जेना- निकट>निअर, शृगाल>सिआर, मधुपर्क>महुअक, कर्णकीलिका> कनइली (कनैली), राजपुत्र>राउत। एहन स्वरक स्थानमे कखनहुँ काल य/ए आबि जाइछ, जेना- वचन=बअन=बएन=बयन, राजा>राअ>राए/राय आदि।

16

संस्कृत मैथिली भाषाक उपजीव्य तँ थिक ; मुदा जखन संस्कृत शब्द मैथिलीक ध्वनिक सानिध्यमे अबैत अछि तँ ओ स्वतः मैथिलीक अनुरूप ढालि जाइत अछि आ' इएह तद्भव रूप कहबैत अछि। उदाहरणार्थ संस्कृतक दूटा स्वरक बीच महाप्राण आ'ऊष्म स्वरक स्थानमे मैथिलीमे 'ह' प्रवेश क'जाइत अछि, जेना-नख>नह, रेखा>रेह, निघात>निहाए, लग्नघट>लगहड, कथ>कह, यूथिका>जूही, मधु>महु, कण्टफल>कटहर, सौभाग्य>सोहाग, द्वादश> बारह, पाषाण> पाहन इत्यादि। दन्त्य व्यंजन मूर्धन्य स्वनक लगमे मूर्धन्य भ' जाइत अछि। जेना, तर्कु> टाकु, त्रुटि>टूटि, मृति>माटि, वृन्त>बेँट, वृद्धि>बाटि इत्यादि। ऊष्म+व्यंजनमे ऊष्म लुप्त भ'जाइछ आ'ओहिसँ पूर्वक स्वर गुरु भ' जाइत अछि आ'अगिला व्यंजन महाप्राण भ'जाइत अछि। जेना- अष्ट>आठ, मस्त>माथ, स्तन>थन, कृष्ण>कान्ह इत्यादि। सूक्ष्म रूपेँ देखल जाए तँ ऊष्मात्व(एच्) आगाँक

व्यंजनपर चलि जाइत अछि।एहिना जखन तवर्गक संग 'य' रहैत अछि तँ ओ चवर्गमे बदलि जाइत अछि, जेना- त्य›च - सत्य›साँच, नृत्य›नाच; द्य› ज- मध्य›माझ, सन्ध्या›साँझ, वन्ध्या› बाँझ, अद्य›आज (हिन्दी), वाद्य›बाजा, वैद्यनाथ›बैजनाथ, ध्य›झ- मध्य›माझ, सन्ध्या›साँझ, वन्ध्या›बाँझ, उपाध्याय›ओझा आदि। तवर्ग+स, 'छ' ध्वनिमे बदलि जाइत अछि। जेना- वत्स› बाछा, मत्स्य› माछ, उत्साह›उछाह आदि। संस्कृतक 'क्ष' (क्+ष) ध्वनि 'ख'/'छ' मे परिणत भ'जाइत अछि, जेना- क्षेत्र›खेत, रक्ष›रख, पक्ष›पख, बुभुक्ष›भूख, लक्ष› लाख, क्षण›खन/छन, क्षार›खार/छार, क्षुर›खुर/छुर इत्यादि। 'अ' ह्रस्व ध्वनि थिक, मुदा कखनो काल मैथिलीमे एकर दीर्घ रूप सेहो भेटैत अछि। जेना- मन›मोन, वन›बोन आदि। 'इ', 'उ' ध्वनि सदैव ह्रस्व रहैछ, मुदा मैथिलीमे ई आ'र बेसी ह्रस्व रूपमे सेहो प्रयोग होइत अछि, जेना- दालि, पानि, छलि, गेलि, सुनि इत्यादि। स्वर ध्वनि 'ए', 'ओ' साधारणतः दीर्घ थिक मुदा स्वराघातक कारणेँ मैथिलीमे ई ह्रस्व रूपमे सेहो अभडैत अछि, जेना- सेरही, लोहिआ, कोनियाँ, ढोलिआ आदि। 'ए', 'औ', स्वर ध्वनिक उच्चारण हिन्दी सदृशहि मैथिलीमे स्वर -पूर्ण आ'अपूर्ण दुनू रूपमे भेटैत अछि, जेना- पएर= पैर, हएत= हएत, सएर=सैर, काओलेज आदि।' न', 'म' व्यंजन अनुनासिक थिक, मुदा कखनहुँ काल ई निरनुनासिक रूपमे सेहो अभडैत अछि, जेना- नाग, माला, मजीरा, माघ, माया इत्यादि। ण, न, म, ड., इअँ , एहि ध्वनि सभक प्रयोग मैथिलीमे स्वतंत्र रूपेँ भेटैछ, जखनकि हिन्दीमे मात्र 'ण' 'न' 'म' सानुनासिक ध्वनिक प्रयोग स्वतंत्र रूपेँ होइछ। जेना, मैथिलीमे चाड़ु.र, माड़ु.र, इअँहाँ, सोड.र, ओठड.र, मास, नाम, इत्यादि अछि। प्राचीन भारतीय आर्यभाषामे एहि प्रकारक प्रयोग एकसरहाँ देखल जा सकैछ। 'ड', 'ढ', ड. ध्वनिक प्रयोग जखन शब्दक प्रारंभमे वा सानुनासिक ध्वनिसँ संयुक्त भए होइत अछि, तँ 'ड' एवं 'ढ' ध्वनि पूर्ण रूपेँ उच्चरित होइत अछि। जेना-ढाकी, ढाकन, खण्ड इत्यादि। मुदा जतए 'ह' कारक ध्वनिक उत्कर्ष रहैछ, ओतए 'ड.' अथवा 'ढ.' उच्चरित होइत अछि। जेना- 'हाड.', 'खढ.' , 'साँढ.' इत्यादि। जाहि तरहेँ मैथिलीमे 'ऋ', 'ऌ' आदिक प्रयोग नहि होइत अछि , ओ परम्परानुसार उच्चरित होइत अछि; तहिना श, ण, य, व, ष'क प्रयोग नहि होइत अछि। मैथिलीमे व-ब, ण-न, श-स, 'ष' कवर्गी 'ख' जेकाँ तथा 'य' ध्वनि चवर्गी 'ज' जेकाँ उच्चरित होइछ। एहि ध्वनि सबहिक प्रयोग मैथिलीमे तत्सम शब्दक कारणेँ राखल गेल अछि, अन्यथा अनुपयुक्त भ' जाइत। जेना-शरवत› सरबत, ऋण› रिन, भाषा› भाषा, वृद्ध›बूढ, यज्ञ›जग/जाग आदि रूपेँ उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग वा पवर्ग'क पहिल चारि ध्वनिक पहिने पाँचम ध्वनि अएलापर ओकर पूर्ण उच्चारण नहि होइत अछि। जेना, कवर्ग- पङ्कज, गङ्गा, चवर्ग-कुंजी, चंचल, टवर्ग-प्रिण्टर, तवर्ग- कुन्ती, शान्ति, पवर्ग-परम्परा, सम्भव इत्यादि। आब पंचमाक्षरक स्थानपर अनुस्वारक (ं) प्रयोग सेहो होइत अछि। जेना-पंकज, गंगा, चंचल आदि। ऋ, र, ष वर्णक बाद 'न' ध्वनि जँ अबैत अछि तँ 'ण' ध्वनि जेकाँ उच्चरित होइत अछि; मुदा ई तत्सम शब्दमे भेटैत अछि, मैथिली शब्दमे नहि। 17 स्पष्टतः जँ कोनो शब्दमे ऋ, ऌ, श, ण, य, ष, व वर्णक उपयोग भेल होअए तँ प्रायः ओ शब्द तत्सम वा विदेशज थिक ने कि मैथिलीक। जेना- शरवत, ऋण, अपराह्ण, शरण, पाषाण आदि एकर तद्भव रूप क्रमशः सरबत, रिन, अपराह्ण, सरन, पाथर आदि होइछ।

निष्कर्ष

मैथिली भाषाक ध्वनि सान्दर्भिक प्रस्तुत आलेख ध्वनि विज्ञानक उपादेयता, ध्वनिक श्रोत एवं विकासपर केन्द्रित अछि, जाहि मध्य विदेशी भाषाक शिक्षा, मातृभाषाक वैशिष्ट्य, विविध भाषाक ऐतिहासिक अध्ययन, विभिन्न लेख-पद्धतिक अध्ययन आ' भाषाक तुलनात्मक अध्यन आदिक हेतु ध्वनि विज्ञानक उपयोगिता सिद्ध अछि। ध्वनिक उत्पत्ति प्रसंग ध्वनि-उद्गमसँ ल' ध्वनि-श्रवणक समस्त प्रक्रियाक उल्लेख कएल अछि; संगहि ध्वनि सम्बन्धी अध्ययन हेतु सांवाहनिक आ' श्रावणिक विज्ञानक महत्वकेँ सेहो बुझाओल गेल अछि। मैथिली ध्वनिक स्रोत प्रसंग विस्तारसँ स्वर-ध्वनि, व्यंजन-ध्वनि, नासिक्य ध्वनि, अन्तस्थ आ' ऊष्म ध्वनिक सहयोगेँ निर्मित शब्द सभमे ध्वनि परिवर्तनक प्रक्रियाकेँ अनेक उदाहरण द' प्रस्तुत कएल गेल अछि।

मैथिली अत्यन्त प्राचीन भाषा अछि। चूकि अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषा सदृशहिँ मैथिली सेहो संस्कृत भाषासँ विकसित भेल अछि, तेँ अद्यावधि संस्कृत सदृशहिँ एहूमे कारक-विभक्ति आ' बहुवाची शब्द ग्रीक, लैटिन, संस्कृत, अवेस्ता आदि संयोगात्मक भाषे जेकाँ मूल शब्दक संग जुडल रहैत अछि।18 ओना मैथिलीमे सहायक क्रिया (परसर्ग) आदि संबंधतत्वक प्रयोग संयोगात्मक आ' वियोगात्मक दुनू रूपेँ प्रयुक्त होइछ; जेना- "जाइत अछि" आ' "जाइछ"। तथापि मैथिलीक भाषावैज्ञानिक लोकनि मैथिलीकेँ हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला आदि भाषा सदृश वियोगात्मके भाषा मानैत छथि। निष्कर्षतः स्थालीपुलक न्यायेन् हमर अल्वल (दृढ) धारणा अछि जे ध्वनिक उपयोगिता, स्रोत, आ' विकासपर केन्दित प्रस्तुत आलेख अनुसंधित्सुलोकनिक हेतु अवश्य सहायक सिद्ध भ' सकैछ।

संदर्भ सूची

[1] झा डा. विजयेन्द्र झा, 2023, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुरः प्रतिभा प्रकाशन, पृ.518

[2] Quoted- झा, डा.विजयेन्द्र, 2024, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुरः प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 474. ओएह, 474

[3] ओएह, 475

[4] ओएह, 474

[5] ओएह, 474

[6] ओएह, 475

[7] ओएह, 475

[8] ओएह, 475

[9] झा पं. गोविन्द, 2007, मैथिली परिशीलन, पटना:मैथिली अकादमी तथा डा. विजयेन्द्र झा, 2023, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 479

[10] ओएह, 480

[11] ओएह, 481

[12] ओएह, 481

[13] ओएह, 481

[14] ओएह, 481

[15] प्राभा- प्राचीन भारतीय आर्यभाषा; मभा- मध्यकालीन भारतीय भाषा, देखू मैथिली भाषाविज्ञान, 2023, प्रतिभा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, लेखक-डा. विजयेन्द्र झा

[16] झा डा. विजयेन्द्र, 2023, मैथिली भाषाविज्ञान, मुजफ्फरपुर : प्रतिभा प्रकाशन, पृ. 551

[17] ओएह, 552

[18] ओएह, 323